फुटपाथ से फूटा शिक्षा का उजियारा

ओम प्रकाश सिंह ● कोलकाता

● मजदूरी के दलदल में फंसे बच्चों के लिए फरिश्ते से कम नही है जिलियन

● उनके रेमेडी स्टडी सेंटर में 1,200 बच्चों को मुहैया कराई जा रही शिक्षा

महानगर कोलकाता के फुटपाथी बच्चों के साथ जिलियन हसलन ● जागरण

कहते हैं कि जिसे चोट न लगी हो, वह दर्द का अहसास नहीं कर सकता। महानगर कोलकाता की फुटपाथ पर पली-बड़ी जिलियन हसलन आज फुटपाथी बच्चों के लिए फरिश्ता बन गई हैं। जिलियन पूरी दुनिया में लोगों के सामने अपनी बात मजबूती से रखना सिखाती हैं। फिलहाल लंदन में रह रही जिलियन को अमेरिका से लेकर संयुक्त राष्ट्र तक में कुशल वक्तव्य के गुर सिखाने को होने वाली परिचर्चाओं में मेंटर बनाया जाता है। बचपन में उनकी एंग्लो इंडियन मां उन्हें खिदिरपुर पड़ोसी के पास छोड़ कर दूसरों के घरों में काम करने चली जाती थी व जिलियन को वहां दिनभर बाथरूम में बंद करके रखा जाता था ताकि वह खाना न मांगे। ऐसे हालातों से गुजरते हुए एक प्रोफेसर ने उन्हें ऐसा तराशा कि आज वे पूरी दुनिया के लिए कोलकाता की पहचान हैं। सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद उनके जैसे हालात से गुजर रहा कोई बच्चा बाल मजदूरी के दलदल में न फंस जाए, इसकी जिम्मेदारी उन्होंने बखूबी संभाल ली है। उन्होंने रेमेडी स्टडी सेंटर की स्थापना की है, जिसमें आज करीब 1,200 बच्चों को बेहतर शिक्षा मुहैया करवाई जा रही है। पूरे कोलकाता समेत हावड़ा, हुगली, उत्तर व दक्षिण 24 परगना जिलों के फुटपाथी बच्चों को तलाशकर उन्हें वैश्विक स्तर की शिक्षा दी जा रही है। उन्हें केवल शिक्षित करना ही जिलियन का लक्ष्य नहीं है बल्कि सशक्त और कौशल प्रतिभा को विकसित करना भी है।

इसके लिए इन्हें अत्याधुनिक प्रशिक्षण देकर वैश्विक हालातों के अनुरूप तैयार किया जाता है। प्रतिभा वैभव की मोहताज नहीं होती, जरूरत है उन्हें निखारने की। इसी को ध्यान में रखते हुए भावी भारत को गढ़ने का सपना जिलियन ने देखा है। उनके पास शिक्षित हो रहे बच्चों को एक बात जरूर सिखाई जाती है कि जिस दिन आप सफल बनेंगे, उसी दिन से समाज की हर उस जिम्मेदारी को ईमानदारी से पूरा करना होगा, जिसकी कमी से कोमल बचपन बाल मजदूरी के दलदल में फंस जाता है। जिलियन की प्रेरणा से शिक्षा पा रहे बच्चों के परिजनों ने कहा कि दो वक्त की रोटी के जुगाड़ में हमारे बच्चे भी भागीदार बनते थे। अब जिलियन के कारण हमारे बच्चे भी सिर उठाकर जीना सीख रहे हैं। इन बच्चों को विकसित करने में हर महीने लाखों रुपये जुटाने के लिए जिलियन दुनियाभर में परिचर्चाओं में वक्तव्य रखती हैं।